

ब्राह्मणी और तिल के बीज

बहुत समय पहले की बात है किसी गांव में एक गरीब ब्राह्मण रहता था। एक दिन उस ब्राह्मण के घर कुछ अतिथि आए। ब्राह्मण की स्थिति इतनी खराब थी कि उन अतिथियों को खिलाने के लिए घर में अनाज तक नहीं था। इस स्थिति को लेकर ही ब्राह्मण और उसकी पत्नी के बीच थोड़ी कहासुनी होने लगती है।

ब्राह्मणी कहती है, “तुम्हें पेट भरने योग्य अनाज कमाना भी नहीं आता है। इसी का नतीजा है कि आज घर में अतिथि आ खड़े हुए हैं और हमारे पास उन्हें खिलाने के लिए कुछ भी नहीं है।”

इस पर ब्राह्मण अपनी पत्नी से कहता है, “कल कर्क संक्रान्ति हैं। मैं कल भिक्षा लेने के लिए दूसरे गांव जाऊंगा। वहां एक ब्राह्मण ने मुझे आमंत्रित किया है। वह सूर्य देव की तृप्ति के लिए कुछ दान देना चाहता है। तब तक जो कुछ भी घर में है, उसे आदर सत्कार के साथ अतिथियों के सामने रखो।”

ब्राह्मण की यह बात सुनकर ब्राह्मणी कहती है, “तेरी पत्नी होकर मैंने कभी सुख नहीं भोगा है। न कभी खाने को मेवा-मिष्ठान मिला, न ही ढंग के वस्त्र और आभूषण। आज तू कह रहा है कि जो भी घर में पड़ा हो, वो अतिथियों के समक्ष रख दो। जब कुछ है ही नहीं, तो मैं उनके सामने क्या रख दूं। पडे हैं, तो बस एक मुट्ठी तिल। तो क्या अतिथियों के सामने सूखे तिल रखना अच्छा लगेगा।”

पत्नी की यह बात सुनकर ब्राह्मण कहता है, “ब्राह्मणी तुम्हें ऐसा बिल्कुल भी नहीं कहना चाहिए। कारण यह है कि इच्छा के अनुसार किसी भी मनुष्य को धन की प्राप्ति नहीं होती है। जरूरी है तो पेट भरना और पेट भरने योग्य अनाज तो मैं ले ही आता हूं। अधिक धन की चाहत अच्छी नहीं। ऐसी इच्छा का तुम्हें त्याग कर देना चाहिए। अधिक धन की इच्छा के चक्कर में मनुष्य के माथे पर शिखा बन जाती है।”

माथे पर शिखा वाली बात सुन ब्राह्मणी बड़े ही आश्चर्य से ब्राह्मण से पूछती हैं, “अधिक धन की इच्छा में माथे पर शिखा हो जाती है। मैं कुछ समझी नहीं, जो भी कहना है खुलकर कहिए।”

ब्राह्मणी के इस सवाल का जवाब देने के लिए ब्राह्मण अपनी पत्नी को “शिकारी और गीदड़ की एक कहानी” सुनाता है।

ब्राह्मण कथा की शुरुआत करता है...

एक दिन एक शिकारी जंगल में शिकार की खोज कर रहा था। जंगल में कुछ दूर आगे बढ़ने के बाद शिकारी को एक काले रंग का पहाड़ जैसा विशाल सूअर दिखाई देता है। सूअर को देखते ही शिकारी अपना धनुष उठा लेता है और कमान खींचते हुए सूअर पर निशाना लगा देता है।

कमान से निकला हुआ तीर तीव्र गति से सूअर को घायल कर देता है। घायल होने पर सूअर चिंघाड़ता हुआ शिकारी पर पलटवार कर देता है। सूअर के तीखे दांतों से शिकारी का पेट फट जाता है। इस तरह शिकार और शिकारी दोनों का ही अंत हो जाता है।

इसी बीच खाने की तलाश में भकता हुआ एक भूखा गीदड़ वहां से होकर गुजरता है, जहां शिकारी और सूअर का शव पड़ा हुआ था। बिना मेहनत इतना सारा भोजन देख गीदड़ मन ही मन बहुत खुश होता है और मन ही मन सोचता है कि आज तो ईश्वर की बड़ी कृपा हुआ, जो इतना अच्छा और अधिक भोजन एक साथ मुझे मिला है। मैं इसे धीरे-धीरे और आराम से खाऊंगा, ताकि लंबे समय तक मैं इसे उपयोग में लाऊंगा। इस तरह मैं इस भोजन के साथ लंबे समय तक अपनी भूख को शांत रख पाऊंगा।

इन सभी बातों पर विचार करते हुए गीदड़ सबसे पहले छोटी-छोटी चीजों को खाना शुरू करता है। तभी उसे शिकारी के मृत शरीर के पास धनुष पड़ा दिखता है। गीदड़ के मन में पहले उसे ही खाने का विचार आता है और वह धनुष पर चढ़ी डोर को चबाने लगता है।

गीदड के चबाने से धनुष पर चढी डोर टूट जाती है और डोर के टूटने से धनुष का एक सिरा वेग के साथ गीदड के माथे को भेदता हुआ ऊपर निकल आता है। गीदड के माथे को भेद कर धनुष का जो सिरा गीदड के सिर पर निकल आता है, वह ऐसा प्रतीत होता है मानो गीदड के माथे पर शिखा निकल आई हो। घायल होने के कारण कुछ देर बाद गीदड की भी मौत हो जाती है।

इतना कहते हुए ब्राह्मण कहता है, “ब्राह्मणी इसीलिए मैं कहता हूँ कि जरूरत से अधिक लोभ से माथे पर शिखा आ जाती है।”

यह कथा सुनने के बाद ब्राह्मणी कहती है, “ठीक है अगर ऐसी ही बात है, तो घर में जो मुट्ठी भर तिल पडे हैं, उन्हीं को मैं अतिथियों को खिला देती हूँ।”

ब्राह्मणी की यह बात सुनकर ब्राह्मण संतुष्ट होता है और भिक्षा मांगने के लिए घर से बाहर निकल जाता है। वहीं, ब्राह्मणी भी घर में पडे तिल को धूप में सुखाने के लिए फैला देती है। तभी कही से एक कुत्ता आ जाता है और उन साफ तिलों पर पेशाब कर देता है, जिससे सभी तिल खराब हो जाते हैं।

तिल के खराब हो जाने पर ब्राह्मणी काफी परेशान हो जाती है और सोचती है यही तो तिल थे, जिन्हें पका कर मैं अतिथियों को खिला सकती थी। अब मैं क्या करूँ? काफी देर सोचने के बाद ब्राह्मणी को एक तरीका सूझा।

उसने सोचा कि अगर वह गंदे तिलों के बदले साफ तिल देने की बात कहेगी, तो कोई भी आसानी से मान जाएगा। साथ ही किसी को भी इन तिलों के खराब होने की बात पता नहीं चलेगी। इस विचार के साथ वह उन तिलों को लेकर घर-घर घूमने लगी।

ब्राह्मणी की यह बात सुनकर एक महिला वह तिल लेने के लिए तैयार हो गई, लेकिन उस महिला का पुत्र अर्थशास्त्र पढा हुआ था। उसने अपनी मां से कहा कि इन तिलों में जरूर कोई न कोई खोट होगी, वरना कौन साफ-सुथरे तिलों को गंदे तिलों के बदले देने के लिए तैयार होगा। पुत्र की यह बात सुनकर महिला ने ब्राह्मणी के तिलों को लेने से मना कर दिया।

कहानी से सीख

हमारे पास जो भी होता है, हमें उसी में सुखी रहना चाहिए। किसी के पास ज्यादा चीज देखकर दुखी नहीं होना चाहिए।

अनुवाद - कुलदीप धर

ब्राह्मणी और तिल के गीण

मरुत मभय परले की ग़ाउ है किमी गांव में एक गरीब ब्राह्मणी
रुतु था। एक दिन उम ब्राह्मणी के अर कुळ मतिषि मुग।
ब्राह्मणी की भ्रुति उतनी परग घी कि उन मतिषिधे के पिपलाने
के लिए अर में मनाए उक नहीं था। उम भ्रुति के लेकर ली
ब्राह्मणी और उमकी पड़ी के गीण घेरी कलाभनी केने लगती है।

ब्राह्मणी करती है, “उम, परे हरने बेगू मनाए कभाना ही नहीं
मुता है। उमी का नतीए है कि मुए अर में मतिषि मु पके फ़ार है
और रुभारे पाभ उने, पिपलाने के लिए कुळ ही नहीं है।”
उम पर ब्राह्मणी मपनी पड़ी में करुता है, “कल कळ मंरुति है। मैं
कल रिखा लेने के लिए एमरे गांव एउंगा। वरुं एक ब्राह्मणी
ने भूरे मुभंदिउ किया है। वरु मुट्ट एव की उषि के लिए कुळ
एन टिन
एरुता है। उम उक एे कुळ ही अर में है, उमे मुएर मङ्गर के
भाष मतिषिधे के भाभने रापे।”

ब्राह्मणी की वरु ग़ाउ मुनकर ब्राह्मणी करती है, “उरी पड़ी केकर
में कही भाप नहीं हैगा है। न कही पात्रे के मेवा-भिष्टान भिला,
न ली एंग के वभु और मुहुधु। मुए उ कुरु ररु है कि एे ही
अर में परा है, वे मतिषिधे के मभरु राप टे। एर कुळ है ली नहीं,
उे में उनके भाभने कू राप टा। परु है, उे मम एक भूरी तिला। उे कू
मतिषिधे के भाभने भूरे तिल रापना मसू लगेगा।”

पड़ी की वरु ग़ाउ मुनकर ब्राह्मणी करुता है, “ब्राह्मणी उम, रिभा
मिल्ल ली नहीं करुना एरु। कारु वरु है कि उमू के
मनुभार किमी ही मनुधु के एन की प्राप्ति नहीं देती है। एरुगी है
उे परे हरना और परे हरने बेगू मनाए उे मैं ले ली मुता फ़ा।
मणिक एन की एरुत मसू नहीं। रिभी उमू का उमू, टुग कर

दैन दानिग। मणिक एन की उम्हा के गकर में भनधु के भाषे पर मापा मन रती है।”

भाषे पर मापा वाली गउ भन दान्नी गउ की मुसुट मे दान्नी मे पुळती है, “मणिक एन की उम्हा मे भाषे पर मापा के रती है। मै कुळ मभापी नही, ऐ ही करन है पुलकर कदिग।” दान्नी के उम भवाल का एवग दैने के लिए दान्नी मपनी पड़ी के “मिकारी उर गीरु की एक करानी” भनता है। दान्नी कषा की मुसुउ करता है...

एक दिन एक मिकारी एंगल में मिकार की पिए कर रता था। एंगल में कुळ दुर मुगे गदने के गद मिकारी के एक काले रंग का पकरु एभा विमाल मुसर मापारं दैता है। मुसर के दैपडे की मिकारी मपना एनुध उा लेता है उर कभान पीपडे कर मुसर पर निमान लगा दैता है।

कभान में निकला रुमु डीर डीव गडि में मुसर के आबल कर दैता है। आबल दैने पर मुसर पिभाउता रुमु मिकारी पर पलएवार कर दैता है। मुसर के डीपे दंते में मिकारी का पेट दए रता है। उम उरु मिकार उर मिकारी दैने का की मंडु के रता है।

उभी गीप पावे की उलाम में रुकता रुमु एक हुपा गीरु वहां में देकर गुएरता है, एहां मिकारी उर मुसर का सब पका रुमु था। गिन भेरुनउ उउन भागा हेएन दैप गीरु भन की भन गरुउ एम दैता है उर भन की भन भेगता है कि मुए डे रंभुर की गरी हुपा रुमु, ऐ उउन मम्हा उर मणिक हेएन एक भाष भुपि भिला है। मै उमे पीरे-पीरे उर मुराभ मे पाउंगा, उकि लंरे मभय उक मै उमे उपवेग में लाउंगा। उम उरु मै उम हेएन के

भाष लंगे मभय तक अपनी रूप के मंड राप पाउंगा।
उन मही गडें पर विचार करते हुए गीदर मगमें परले केपी-
केपी गीएँ के पात्रा सुरु करत है। उही उमें मिकारी के भु
मगीर के पाम एनुध परा पिपत है। गीदर के मन में परले उमें
की पात्रे का विचार मुत है। और वरु एनुध पर गडी रेर के
गगने लगत है।

गीदर के गगने में एनुध पर गडी रेर एए एडी है। और रेर के
एएने में एनुध का एक मिरा वेग के भाष गीदर के भाष के
हैदत क्रमु उपर निकल मुत है। गीदर के भाष के हैद कर
एनुध का एं मिरा गीदर के मिर पर निकल मुत है, वरु रिभा
पुडीउ देत है। भात्रे गीदर के भाष पर मिया निकल मुत है।
आयल केने के कार... कुळ रेर गद गीदर की सी भेउ के एडी
है।

उतना करुते हुए गद... करुत है, “गद...गी उमीलिया मैं करुत
ऊं कि एरुरत में मणिक लेरु में भाष पर मिया मु एडी है।”
वरु कषा मुनने के गद गद...गी करुती है, “वीक है मगर रिभी
की गत है, उे अर में एं भुष्टी रर डिल परु है, उनीं के मैं मडिषिधें
के पिपला रूडी ऊं।”

गद...गी की वरु गत मुनकर गद... मंडुध देत है। और रिबा
भात्रे के लिए अर में गदर निकल एत है। वनीं, गद...गी सी
अर में परु डिल के एप में भापात्रे के लिए रूला रूडी है। उही
कनी में एक कुडु मु एत है। और उन भाद्र डिलें पर पेमग कर
रूत है, एिममें मही डिल पेमग के एत है।

डिल के पेमग के एने पर गद...गी काही प्रेमगन के एडी है। और
भेगडी है वनीं उे डिल घे, एरिने, पका कर मैं मडिषिधें के पिपला

भकती थी। मगर मैं कृ कर्तुं? काजी रर भेएने के गद गृद्वणी के एक उगीका भूए।

उभने भेएा कि मगर वरु गंरु डिले के गदले भाद डिल रने की गउ करेगी, डे केरं सी सुभानी मे भान एएगए। भाष की किभी के सी उन डिले के एगए डेने की गउ पउ नकीं एलेगी। उभ विएएर के भाष वरु उन डिले के लेकर अर-अर अुभने लगी।

गृद्वणी की वरु गउ भुनकर एक भफिला वरु डिल लेने के लिए डेएर डे गरं, लेकिन उभ भफिला का पुरु मरु माभु पदरु रुमु ष। उभने मपनी भं मे करु कि उन डिले मे एरु केरं न केरं ऐए डेगी, वरुन के न भाद-भुषरे डिले के गंरु डिले के गदले रने के लिए डेएर डेगए। पुरु की वरु गउ भुनकर भफिला ने गृद्वणी के डिले के लेने मे भन कर ढिया।

करुनी मे भीप -

रुभारे पाम ऐे सी डेरु के, रुमे उभी मे भुपी ररुन एरुडिए।
किभी के पाम रृए एीए रीपकर रूपी नकीं डेन एरुडिए।

मनुवद - कुलदीप एर